संध्या-सुंदरी-निराला-हिंदी रचना -बी०ए०पार्ट-2,मनोज कुमार सिंह,

राजा सिंह महाविद्यालय, सिवान।

संध्या-सुंदरी-निराला

दिवसावसान का समय-

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या-सुन्दरी, परी सी,

धीरे, धीरे, धीरे

तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास,

मधुर-मधुर हैं दोनों उसके अधर,

किंतु गंभीर, नहीं है उसमें हास-विलास।

हँसता है तो केवल तारा एक-

गुँथा हुआ उन घुँघराले काले-काले बालों से,

हृदय राज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

अलसता की-सी लता,

किंतु कोमलता की वह कली,

सखी-नीरवता के कंधे पर डाले बाँह,

छाँह सी अम्बर-पथ से चली।

नहीं बजती उसके हाथ में कोई वीणा,

नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,

नूपुरों में भी रुन-झुन रुन-झुन नहीं,

सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'

है गूँज रहा सब कहीं-

व्योम मंडल में, जगतीतल में-

सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में-

सौंदर्य-गर्विता-सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल में-

धीर-वीर गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में-

उत्ताल तरंगाघात-प्रलय घनगर्जन-जलधि-प्रबल में-

क्षिति में, जल में,नभ में, अनिल-अनल में-

सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'

है गूँज रहा सब कहीं-

और क्या है? कुछ नहीं।

मदिरा की वह नदी बहाती आती,

थके हुए जीवों को वह सस्नेह,

प्याला एक पिलाती।

सुलाती उन्हें अंक पर अपने,

दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने।

अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,

कवि का बढ़ जाता अनुराग,

विरहाकुल कमनीय कंठ से,

आप निकल पड़ता तब एक विहाग!

प्रसंग:-प्रस्तुत कविता छायावाद के प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित है । यों तो सभी छायावादी कवियों का प्रकृति प्रिय विषय रहा है , लेकिन प्रकृति में भी संध्या के प्रति अपेक्षाकृत सघन आकर्षण इन कवियों को विशेष रूप से रहा है। इस कविता में कवि ने संध्या का संश्लिष्ट चित्र उपस्थित करने की कोशिश की है ।

भावार्थ:- कवि मेघमय आसमान से धीरे-धीरे उतरती परी के रूपक में संध्या को परिकल्पित कर शाम होने की पूरी प्रक्रिया को शब्दों में प्रस्तुत किया है । कवि सांध्य-वेला के प्रशांत स्थिति को रूपायित करते हुए कहता है कि तिमिरांचल(सूर्य अस्त होने की दिशा में) पूर्णतः शांत स्थिति बनी हुई है ।अस्तांचल के क्षितिज पर वर्तमान लालिमा की संध्या-परी के दो अधरों से साम्य की कल्पना करते हुए --"किंतु गंभीर, नहीं है हास-विलास" के माध्यम से संध्याकाल की प्रशांत और मधुर स्थिति को प्रस्तुत करने की कोशिश की है। शाम के समय आकाश में शुक्र तारा के उगने की क्रिया को अद्भुत कल्पना के सहारे अभिव्यक्त करते हुए

कविकहता है कि मानो वह तारा संध्या-परी के घने काले बालों के बीच से उसका अभिषेक करने के लिए उपस्थित हुआ है।

आगे कवि ने सांध्यकालीन नीरवता,अलसता और मौन को व्यंजित करने के लिये "सखी नीरवता के कंधे पर डाले बाँह"का योजन किया है। आगे इसी प्रशांत स्थिति को व्यंजित करने के लिए लिखता है -

नहीं बजती उसके हाथ में कोई वीणा,

नहीं होता कोई अनुराग-राग-आलाप,

नूपुरों में भी रुन-झुन रुन-झुन नहीं,

सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'

है गूंज रहा सब कहीं-----

संध्याकाल के शांत वातावरण की नीरवता की अमूर्त,सूक्ष्म और सुकोमल स्थिति के प्रस्तुति के लिये कवि गंभीर आवेग के साथ,लयात्मक विस्तार में,'चुप-

चुप-चुप' की गूंज को समाहित करता है।वीणा का न बजना,अनुराग-राग-आलाप का न होना और नूपुरों(घुंघुरू) में रुनझुन-रुनझुन का अभाव 'संध्या-सुंदरी' के प्रशांत,सादे व्यक्तित्व को ध्वनित करते हैं। इतना सब का न होना 'चुप-चुप-चुप' से अनुगुंजित हो रहा है ।

आगे इस 'चुप-चुप-चुप' का सर्वव्यापी विस्तार हो रहा है-

व्योम मंडल में, जगतीतल में-
सोती शान्त सरोवर पर उस अमल कमलिनी-दल में-
सौंदर्य-गर्विता-सरिता के अति विस्तृत वक्षस्थल में-
धीर-वीर गम्भीर शिखर पर हिमगिरि-अटल-अचल में-
उत्ताल तरंगाघात-प्रलय घनगर्जन-जलधि-प्रबल में-
क्षिति में, जल में,नभ में, अनिल-अनल में-
सिर्फ़ एक अव्यक्त शब्द-सा 'चुप चुप चुप'

इस 'चुप-चुप-चुप' के भव्य प्रसार में सांध्यकालीन शांत वातावरण का यह प्रकृति-व्यापी अंकन बेजोड़ है ।

प्रकृति के सुकोमल और रौद्र दोनों क्षेत्रों में 'चुप-चुप-चुप' की गूंज सनी हुई है। क्षिति में,जल में,नभ में,अनिल-अनल में उसी 'चुप,चुप,चुप' गूंज-अनुगूंज को प्रतिष्ठापित कर कवि इस विराट चित्र को शब्दों में बांधने की कोशिश करते हैं।

और क्या है? कुछ नहीं।

मदिरा की वह नदी बहाती आती,

थके हुए जीवों को वह सस्नेह,

प्याला एक पिलाती।

सुलाती उन्हें अंक पर अपने,

दिखलाती फिर विस्मृति के वह अगणित मीठे सपने।

अर्द्धरात्रि की निश्चलता में हो जाती जब लीन,

कवि का बढ़ जाता अनुराग,

विरहाकुल कमनीय कंठ से,

आप निकल पड़ता तब एक विहाग!

'और क्या है?कुछ नहीं' का शब्द प्रयोग के बाद सांध्यकाल के दृश्य-संवेदन से संतुष्ट हो आगे संध्या के दूसरे तत्व विश्राम का अंकन करता है । कवि की संध्या सुंदरी परी मदिरा की नदी बहाती हुई आती है।दिनभर के श्रम से थके हुओं को विश्राम, क्लांति-मुक्तता प्रदान करती है।इतना सब कर के संध्या-सुंदरी अर्धरात्रि की निश्चलता में पूरी प्रकृति को लीन अगली सुबह के लिए तैयार करने लगती है। इस अर्धरात्रि की निश्चलता में कवि के विरहाकुल हृदय से अपने आप गीत निकल पड़ते हैं।